



संपादकीय

भारत में शिक्षा की दृष्टिशाली

भारत में शिक्षा की कितनी दुरुश्वस्त है, इसका पता यूनेस्को की एक तजा रपट से चल रहा है। 75 साल की आजादी के बावजूद एशिया के छोटे-मोटे देशों के मुकाबले भारत क्यों पिछड़ा हुआ है, इसका मूल कारण यह है कि हमारी सरकारों ने शिक्षा और चिकित्सा पर कभी समुचित ध्यान दिया ही नहीं। इसीलिए देश के मुट्ठीभर लोग अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में पढ़ाते हैं और निजी अस्पतालों में अपना इलाज करवाते हैं। देश के 100 करोड़ से भी ज्यादा लोगों के बच्चे उचित शिक्षा-दीक्षा से और वे लोग पर्याप्त चिकित्सा से बच्चित रहते हैं। यूनेस्को ने भारत में खोज-पड़ताल करके बताया है कि देश के 73 प्रतिशत माता-पिता अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ाना पसंद नहीं करते हैं, ब्योकिं वहाँ पढ़ाई का स्तर घटिया होता है। वहाँ से पढ़े हुए बच्चों को ऊंची नौकरियां नहीं मिलती हैं, ब्योकिं उनका अंग्रेजी ज्ञान कमजोर होता है। हमारी सरकारों के निकम्मेपन के कारण आज तक सरकारी नौकरियों में अंग्रेजी अनिवार्य है। अंग्रेजी माध्यम से पढ़े हुए बच्चे बड़े होकर या तो सरकारी नौकरियां हाथियाने या फिर अमेरिका और कनाडा भागने के लिए आतुर रहते हैं। गैरसरकारी स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों की फीस 50-50 हजार रुपये महीना तक है। आजकल अस्पताल और ये शिक्षा-संस्थाएं देश में टीपी के सबसे क्रूर ठिकाने बन गए हैं। देश के गरीब, ग्रामीण, पिछड़े और आदिवासी लोग समुचित शिक्षा और चिकित्सा के बिना ही अपना जीवन गुजारते रहते हैं। सरकारी स्कूल और अस्पताल भी उनकी सेवा सरल भाव से नहीं करते। देश के 90 प्रतिशत स्कूल फीस वसूली के दम पर जिन्दा रहते हैं। देश में 29600 स्कूल ऐसे हैं, जिहें मान्यता प्राप्त नहीं है। 4 हजार से ज्यादा मदरसे भी इसी श्रेणी में आते हैं। इन स्कूलों से निकलने वाले छात्र क्या नए भारत के निर्माण में कोई उल्लेखनीय योगदान कर सकते हैं? यदि हम शिक्षा के मामले में भारत की तुलना दक्षेस के हमारे पड़ासी सातों देशों से करें तो उक्त पैमाने पर वह अफगानिस्तान के सबसे करीब है लेकिन वह श्रीलंका, भूटान और पाकिस्तान से भी बहुत पिछड़ा हुआ है। दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा राष्ट्र भारत है। प्राचीन भारत की शिक्षा-व्यवस्था जग प्रसिद्ध रही है। चीन, जापान और यूनान से सदियों पहले लोग भारत इसीलिए आया करते थे कि यहाँ की शिक्षा-प्रणाली उन्हें सर्वश्रेष्ठ लगा करती थी।

निठल्लों का ओजार, सोशल मीडिया

सजाव ठाकुर
जैसा की किताब का नाम ही है उससे स्पष्ट परिलक्षित होता है कि यह कृति घर द्वारा और आमदनी की वृत्तियों से फुर्सत पाए निठल्लों पर प्रकृति द्वारा ही है, निठल्लों का औजार सोशल मीडिया है या निठल्ला करने का औजार सोशल मीडिया है। सृजन मनुष्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं उपर्युक्त कार्य है, मेरी अवधारणा है कि साहित्य में ही सजक व्यायका

गत घर द्वारा आर आमदना का वृत्ताया से फुस्त पाए निठल्ला पर पर द्वितीय ही है, निठल्लों का औजार सोशल मीडिया है या निठल्ला करने वाले औजार सोशल मीडिया है। सुजन मनुष्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं पदिय कर्य है, मेरी अवधारणा है कि साहित्य में ही सजक व्यग्यकार

प्रेटापर दर्श पा दानका पा तरह जाखला
कर रहा है। उससे देश को लड़ना ही
होगा। सरकार का प्रयास है कि जिन्होंने

सदश का जन-जन तक पहुचान आर
जागरूकता लाने के लिए पिछले दिनों
हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी न्यूज एजेंसी

विकसित भारत का प्रण और प्रधानमंत्री



४०

सरकार ने व्यवस्था में

त्यापक सुधार किया है। घालोस कंद्र
करोड़ जनधन खाते खोले गए। विगत
आठ वर्षों में डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर द्वारा आधार, मोबाइल जैसी आधुनिक व्यवस्थाओं का उपयोग करते हुए देश के दो लाख करोड़ रुपये को गलत लोगों के हाथों तक जाने से रोक उन्होंने

दिया गया

दुनिया का भूमि की की धन का कि आपकरने तेहं ताज नना जरत कि प्रोक्ट नान, न ने इतिहास पर जो कुछ भी लिखा है उसबसे पहले एक बड़ा हिस्सा भारत रचा-पढ़ा गया। भारत इकलौता देश है ज्ञान और प्रज्ञा के संवर्धन के लिए जाता है। एस गुरुमर्ति ने कहा कि सभी की आवश्यकता है कि हम भारत समझें।

'पंच प्रण' का विचार तभी साकार है जब हम भारत के बारे में फैले भ्रम निवारण करेंगे। जिस भारत को हम जाहैं वह प्रोपेंगंडा पर आधारित है। हम अभी भारत के गौरवशाली इतिहास से अनर्थी हैं। भारत केवल आध्यात्मिक शक्ति तौर पर ही समृद्ध नहीं रहा, बर्ता अर्थशास्त्र, विज्ञान, सामाजिक व्यवस्था विषयों में भी यूरोप और अन्य सभ्यताएँ

ગ્રિકોણીય ગુજરાત ચુનાવ મેં સતપેટિયાં હી યજ ખોલેંગી

लालत गग

चुनाव आवाग म्भ्रा गुरुवार का गुजरात विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा के साथ ही राजनीतिक सरगमिया उग्र हो गयी है। किसी भी राष्ट्र एवं प्रांत के जीवन में चुनाव सबसे महत्वपूर्ण घटना होती है। यह एक यज्ञ होता है। लोकतंत्र प्रणाली का सबसे मजबूत पैर होता है। राष्ट्र के प्रत्येक वयस्क के संविधान प्रदत्त पवित्र मताधिकार प्रयोग का एक दिन। सत्ता के सिंहासन पर अब कोई राजपुरोहित या राजगुरु नहीं अपितु जनता अपने हाथों से तिलक लगाती है। गुजरात की जनता इन चुनावों में किसको तिलक करेगी, यह भविष्य के गर्भ में है। भले ही 1995 से ही भाजपा लगातार मजबूती से चुनाव जीतती रही है, क्या इस बार भी वह यह इतिहास देहरायेगी? कांग्रेस यहां सफल एवं सक्षम प्रतिद्वंद्वी रही है, पिछली बार सत्ता के करीब पहुँचने में वह एक बार फिर चुकी थी, क्या इस बार वह ऐसा कर पायेगी? आम आदमी पार्टी दिल्ली जैसा कोई चमत्कार घटित कर पायेगी?

इन सवालों के बीच मुख्य टक्कर तो इस बार भी भाजपा एवं कांग्रेस के बीच है, तीसरे मजबूत दल के अभाव को दूर करते हुए आम आदमी पार्टी ने अपनी उपस्थिति से भाजपा एवं कांग्रेस दोनों को ही कड़ी टक्कर दे रहा है। दोनों ही दलों की इस बार राह समाजकरण बदलता दिख रहा है, वह चुनाव त्रिकोणात्मक होता दिख रहा है। आप नेता अरविंद केजरीवाल कई महीनों से उत्प्र प्रचार कर रहे हैं, जिसका असर भी दिखने लगा है। झाड़ लोगों का भरोसा जीत पाएगी या नहीं, यह कह पाना मुश्किल है। इस बार का चुनाव मजेदार होने के साथ संघर्षपूर्ण होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है। चुनावों का नतीजा अभी लोगों के दिमागों में है। मतपोतियां क्या राज खोलेंगी, यह समय के गर्भ में है। पर एक संदेश इस चुनाव से मिलेगा कि अधिकार प्राप्त एक ही व्यक्ति अगर ठान ले तो अनुशासनहीनता एवं भ्रष्टाचार की नकेल डाली जा सकती है। लोगों का विश्वास जीता जा सकता है। सुशासन स्थापित किया जा सकता है।

182 विधानसभा सीटों की यह विधानसभा क्या एक बार फिर भाजपा को सत्ता पर बिठायेगी? यह प्रश्न राजनीतिक गलियारों में सर्वाधिक चर्चा में है। भले ही त्रिकोणात्मक परिवर्षों में भाजपा की राह भी संघर्षपूर्ण बन गयी है। क्योंकि इस बार के चुनाव नये परिवेश एवं नवीन स्थितियों के बीच त्रिकोणीय होंगे। यहां के पिछले उप-चुनाव भी त्रिकोणीय संघर्ष के सकेत दे रहे हैं। मगर इस संघर्ष में एक तरफ भाजपा है, तो दूसरी तरफ आप और कांग्रेस। मौजूदा स्थिति यही है। अदिवासी समुदाय ऐसा उम्मीदवार

मतदाता भाजपा, विशेषकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से प्रभावित हैं। इसीलिए नरेंद्र इस बात पर होगी कि गुजरात चुनावों में दूसरे और तीसरे पायदान पर कौन सी पार्टी कब्जा करती है? भले ही ही स्थानीय निकाय के चुनावों में, खासकर सूरत के इलाकों में आप ने शानदार प्रदर्शन किया है, जिससे उसे नई ऊर्जा मिली है, मगर यह जोश जीत में कितना बदल पाएगा, इस बारे में अभी कुछ भी कहना मुश्किल है। पिछले विधानसभा चुनावों में भाजपा ने ढाई फीसदी वोट प्रतिशत का इंजाफा करते हुए 41.4 प्रतिशत वोट के साथ स्पष्ट बहुमत से 7 सीटें अधिक लेकर 99 सीटें हासिल की एवं सरकार बनायी। उस समय भी मोदी के ही जादू ने असर दिखाया, जादू तो इस बार भी मोदी ही दिखायेंगे। लेकिन एक प्रभावी नेतृत्व एवं आपसी फूट के कारण भाजपा की स्थिति जटिल होती जा रही है। गुजरात में अदिवासी मतदाता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, अदिवासी समुदाय के मुँहों की उपेक्षा एवं आदिवासी नेताओं की उदासीनता के कारण इस बार भी यह समुदाय नाराज दिख रहा है। सीटों के बटवारे के समय उचित एवं प्रभावी उम्मीदवारों का चयन करके इस नाराजगी को दूर किया जा सकता है। अदिवासी समुदाय ऐसा उम्मीदवार

आदिवासी सत्ता नार्ग राजद्रव विजयों का नाम भी उम्मीदवारों की सच्ची में होने की चर्चा है। ऐसे ही उम्मीदवारों से आदिवासी समुदाय के वोटों को प्रभावित किया जा सकता है।

गुजरात चुनाव में मुद्दे तो बहुत से हैं। मुख्य मुद्दा तो मोबाइल में हुआ पुल हादसा बन सकता है। जाहिर है, विपक्ष इसे चुनावी मुद्दा बनाकर भाजपा पर तीखे वार करेंगी। यहां आप मतदाताओं में सत्तारूढ़ दल के प्रति कुछ असंतोष दिखाई देता है। खासकर पैशन योजना को लेकर, क्योंकि यहां सरकारी कर्मचारियों की संख्या काफी ज्यादा है, जो चुनाव में तुलनात्मक रूप से कहीं ज्यादा असरकारक होते हैं। यही वजह है कि हर चुनाव में यहां सरकारी कर्मचारियों के मूड़ का भांपने का प्रयास किया जाता है। नाराज कर्मचारियों एवं उपेक्षित अदिवासी समुदाय-इन दो मुद्दों पर सकारात्मक सोच से भाजपा अपनी कमज़ोर जड़ों की काट कर सकती है। अब तो चुनावी टिकटों का बंटवारा ही एकमात्र हल है। भाजपा ने इसके खिलाफ भी कमर कस ली है। उसने करीब एक-तिहाई मौजूदा विधायकों का टिकट काट दिया है और नए चेहरों पर भरोसा किया है। एक और प्रभावी कोशिश में उसने करीब एक साल पहले यहां का पूरा मॉर्टिमंडल कांग्रेस यहां मजबूत दल हुआ करती थी,

मेरे बाघों का स्वागत है!

पित्रकृट, रें बाघों का स्वागत है!

मुकुंद
भगवान श्रीराम की तपोभूमि 'चित्रकूट' बाधों के स्वयात्र के लिए जल्द तैयार होगी। दुनिया में सफेद शेरों की राजधानी के रूप में विख्यात मध्य प्रदेश के रीवा को इसी चित्रकूट जिले की सीमा मानिकुर से कुछ दूर पर छूती है। मानिकुर का 'पाठा' पानी के अभाव और दस्युओं के लिए कुख्यात रहा है। इनकी बर्बरता की वजह से उत्तर प्रदेश के बुदेखण्ड के चित्रकूट के इसी 'पाठा' को संसार 'मिनी चंबल' भी कह चुका है। रीवा में साल 2016 में सफेद बाधों का दुनिया का पहला अभ्यारण्य आबाद हो चुका है। अब केंद्र सरकार ने रानीपुर टाइगर रिजर्व की घोषणा की होगा। अब रानीपुर वन्यजीव विवर्दकों की तड़तड़ाहट से नहीं, वे की दहाड़ से गंजागा। यह उत्तर प्रदेश सरकार की बड़ी पहल का नतीज मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अध्यक्षता में गठित उत्तर प्रदेश वन्यजीव बोर्ड ने रानीपुर को प्रदेश का चौथा टाइगर रिजर्व बनाने के परियोजना को मंजूरी देते आदिवासी बहुल गांव बहिलपुर रेस्क्यू सेंटर बनाने की घोषणा की करीब 600 वर्ग किलोमीटर वन के रानीपुर वन्यजीव विहार के जल्दी की देखरेख अब तक मीरजापुर कैम्पस वन्यजीव प्रभाग करता था। यहाँ की देखरेख चित्रकूट वन प्रकरण करेगा। टाइगर रिजर्व अधिसूचना देने की तिथि अप्रैल 2018 की है।

दिगा। अब रानीपुर वन्यजीव विवरण बन्दूकों की तड़तड़ाहट से नहीं, वरन् दी हाड़ से मूर्जेगा। यह उत्तर प्रदेश सरकार की बड़ी पहल का नरीज मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अध्यक्षता में गठित उत्तर प्रदेश वन्यजीव बोर्ड ने रानीपुर को प्रकाश चौथा टाइगर रिजर्व बनाने वाली योजना को मंजूरी देते आदिवासी बहुल गांव बहिलपुरल स्क्यू सेंटर बनाने की घोषणा की। करीब 600 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र करेगा। रानीपुर वन्यजीव विहार के जल्दी देखरेख अब तक मीरजापुर कम्फर्म वन्यजीव प्रभाग करता था। वहाँ की देखरेख चित्रकूट वन प्रशासन करेगा। टाइगर रिजर्व अधिसूचना

पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने ट्रॉटर करकर 22 दी। रानीपुर टाइगर रिजर्व भारत का 53 वां टाइगर रिजर्व है। प्रभागीय वनाधिकारी आबादी के दीक्षित खुशी जाहिर करते हुए कहते हैं कि इस रिजर्व में तपोभूमि के पूरे जंगल चित्रकूट बन प्रभाग से समाहित हो गए हैं। प्रभागीय वनाधिकारी ही इस रिजर्व का उप निदेशक होगा। भूपेंद्र यादव ने इसे बाघ संरक्षण की दिशा में सार्थक पहल करार दिया है। यहां सबसे महत्वपूर्ण यह है कि रानीपुर देश का एकमात्र रिजर्व है जिसमें एक भी बाघ का स्थाइ निवास नहीं है। बावजूद इसके यह बाघों की आवाजाही का महत्वपूर्ण गलियारा है। यह मध्य प्रदेश के बाघों के लिए अदार्श रानीपुर बन्यजीव विहार की स्थापना 1977 में हुई थी। इसका मकसद स्थानीय स्तर पर विचरण बाली बन्यजीव आबादी को सुरक्षित स्थान देना और अपनी तरह के अनोखे बन क्षेत्र की संरक्षण करना था। अब बाघों को मध्य प्रदेश के पन्ना टाइगर रिजर्व में पानी भरने की स्थिति में चित्रकूट की पहाड़ियों में सुरक्षित और स्थायी निवास मिल सकेगा। इसकी वजह यह है कि यह पूरा इलाका ऊर्जा कटिंग-थ्रीय शुक्र पर्णपाती बन है। यहां बड़े संख्या में भालू, चित्तीदार हिरण, सांभर, चिकागा के अलावा तेंदुए आदि विचरण करते हैं। भारत में पिछले दो दशक से बाघ संरक्षण पर ठीक-ठाक काम हुआ है। संभवतः इसके बाघों की आवाजाही का महत्वपूर्ण गलियारा है। यह मध्य प्रदेश के बाघों के लिए अदार्श काटने के लिए हर देश अपने अपने स्तरपर नीतियां रणनीतियां बनाकर एकशन मोड में काम कर रहे हैं, परंतु हम भारत में देखें तो पिछले कुछ वर्षों से भ्रष्टाचार रूपी समृद्ध घने पेड़ की एकशन मोड में अनेक नीतियां पीएम ने कहा था एक बाबू का बड़ा सिटी में गुप्त या अद्योपित महंगा प फलेट कैसे? की जांच होगी इत्यादि बातों को गुप्त जांच कर सबूत जुटाकर उनपर कार्यवाही की जाए तो भ्रष्टाचार की जीरो टॉलरेंस स्थिति आने में देर नहीं लगेगी। चूंकि माननीय पीएम ने सीवीसी के विकासित भारत के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत के संकल्प पर मनाए जा रहे सतर्कता सत्ताह पर यह संकल्प आज के

भष्टाचार पर जीगे टॉलिंगेस

‘किशन भावनानी’
वैश्विक स्तरपर भ्रष्टाचार एक गंभीर समस्या है जिसकी जड़ें काटने के लिए हर देश अपने अपने स्तरपर नीतियां रणनीतियां बनाकर एकशन मोड में काम कर रहे हैं, परंतु हम अगर भारत में देखें तो पिछले कुछ वर्षों से भ्रष्टाचार रूपी समृद्ध घने पेड़ की एकशन मोड में अनेक नीतियां रणनीतियां कार्यक्रम बनाकर उसका खाद पानी बंद कर जड़े काटने के लिए काम किए जा रहे हैं, जिसका सबसे अच्छा उदाहरण डीबीटी, डिजिटल इंडिया और अब भारतीय मुद्रा का डिजिटलीकरण लेकर आना याने ई रुपया। मेरा मानना है कि अब तक नीकी अनेक उपाय किए गए हैं अब सीधीसी और ईडी जैसी ऐजेंसियों को एक रणनीति के तहत उनकी आर्थिक उपलब्धियों स्थितियों पर एक विशेष गुप्त जांच अभियान चलाना जरूरी है कि एक सामान्य बाबू का रहन-सहन इतना उच्चस्तरीय क्यों? उनके बच्चों और अन्य सदस्यों पर इतना खर्चा और सुविधाओं का उपभोग कैसे होता है? एक सभा में माननीय पीएम ने कहा था एक बाबू का बड़ी सिटी में गुप्त या अद्याधित महंगा प फलेट कैसे? की जांच होगी इत्यादि बातों को गुप्त जांच कर सबूत जुटाकर उनपर कार्यवाही की जाए तो भ्रष्टाचार की जीरो टॉलरेंस स्थिति आने में देर नहीं लगेगी! चूंकि माननीय पीएम ने सीधीसी के विकसित भारत के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत के संकल्प पर मनाए जा रहे सतर्कता सप्ताह पर यह संकल्प आज के

चित्रकूट - खेल संदेश

श्रद्धालुओं ने मंदाकिनी में इबकी लगा किया दीपदान रंग-बिरंगी रोशनी से सजा रहा रामघाट

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। छोटी दीपावली मेला में लाखों श्रद्धालुओं ने मंदाकिनी नदी में स्नान कर रामघाट में दीपदान किया। इससे मंदाकिनी नदी रोशनी के बीच हिलेरे मारने लगी। रंग-बिरंगी रोशनी से सराबर धर्मनगरी में दीपदान के लिए श्रद्धालुओं का रेला लगा।

शुक्रवार को छोटी दीपावली पर्व पर लगभग पाँच लाख श्रद्धालुओं ने मंदाकिनी में स्नान कर मत्स्याचयन-शंकर भगवान का जलाभिषेक कर कामदीगरि पर्वत की परिक्रमा की। इसके बाद चित्रकूट परिश्रेत्र के विभिन्न धार्मिक स्थलों का दर्शन करने पहुंचे। यूपी-एमपी सीमा पर बसी



धर्मनगरी में लगने वाले मेले में धर्मनगरी आए। कामदीगरि परिक्रमा श्रद्धालु बसों और निजी वाहनों से

मेले में भीड़ को संभालने में अधिकारियों को खासी मेहनत करनी पड़ी। मेला क्षेत्र में चारों तरफ श्रद्धालुओं का जल्दा ही जत्था ही जथा दिखाई दिया।

जय श्री राम से

धर्मनगरी गुजायमान हो गई। श्रद्धालुओं ने बांस की बनी चैचट में एक साथ सैकड़ों दीपों को रखकर नदी में लगेपदान किया। यूपी-एमपी क्षेत्र के पंचकोसी दीपदान मेला क्षेत्र को द्वारा दखल की तरह सजाया गया। खास कर रामघाट में नजारा शाम से अद्वितीय नज़र आता है, जहां पर एक दूसरे की धक्का-मुक्की करते हुए मंदिर तक पहुंचे और कामदीगरि की परिक्रमा लगाई।



शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक अतुल शर्मा के निर्देशन में क्षेत्राधिकारी यातायात शिक्षकार्यालयों को सवारियां कर यातायात प्रभारी योगेश रायद अपनी टीम के साथ वाहनों में सुरक्षा जाली, फर्स्ट एड बॉक्स, फिनेस, अविनशमन यंत्र, ओवरलोड देखा गया। जिन वाहनों में सुरक्षा जाली नहीं लगी, उन वाहन चालकों को सुरक्षा जाली लगाने के लिए दिया।

वहीं मालवाहक वाहनों में सवारियां ले जाने वाले तीन वाहनों का चालान किया गया।

यातायात माह: नरी में गाड़ी चलाया तो खैर नहीं



शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक अतुल शर्मा के निर्देशन में क्षेत्राधिकारी यातायात शिक्षकार्यालयों को सवारियां कर यातायात प्रभारी योगेश रायद सोनकर व यातायात प्रभारी योगेश रायद अपनी टीम के साथ वाहनों में सुरक्षा जाली, फर्स्ट एड बॉक्स, फिनेस, अविनशमन यंत्र, ओवरलोड देखा गया। जिन वाहनों में सुरक्षा जाली नहीं लगी, उन वाहन चालकों को सुरक्षा जाली लगाने के लिए दिया।

वहीं मालवाहक वाहनों में सवारियां ले जाने वाले तीन वाहनों का चालान किया गया।

मेन्यू से बच्चों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम



यूपी मेन्यू से बच्चों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

यूपी रोपों को दूध, केला व दलिया दें: डीएम

